ॐ

~~~~~~~~

कक्षा-नवम् **विषय -हिन्दी**

दिनांक-30/05/2020 **गद्य- खंड**

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मंगल प्रभात,

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

प्यारे बच्चों ,पिछली कक्षा में आपने पढ़ा कि किस तरह लेखक, राहुल सांकृत्यायन तिब्बत की यात्रा की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं और इस आगे बढ़ने के क्रम में वे जहाँ रुकते हैं, उस जगह पर औरत पर्दा करने से दूर है। अर्थात परदा नहीं करती है औरत वहां ।छुआछूत जाति -पाँति वाली कोई बात नहीं है। लेखक जब एक भिखारी के रूप में जाते हैं तो उन्हें ठहरने की जगह मिलती है लेकिन वही लेखक जब पाँच साल बाद एक
~~~~~~~~

भद्र पुरुष के रूप में जाते हैं, घोड़े पर सवार होकर, उन्हें ठहरने की भी जगह नहीं मिलती है । पाँच साल के अंतराल में मनुष्य की अनुवृत्ति एक जैसी नहीं होती है, इस बात को लेखक ने यह महसूस किया है। आज की कहानी इस प्रकार आगे बढ़ती है,

ल्हासा की ओर

--राहुल सांकृत्यायन

अब हमें सबसे विकट डाँड़ा थोड्ला पार करना था। डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं ।सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊंचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गांव- गिराँव नहीं होते ।नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए,तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है ,लेकिन इन निर्जन स्थानों में

मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया -विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती है और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता । डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं,उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं ।हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं ।डाकू यदि जान से न मारे तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है ।गाँव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़्ला के पास खून हो गया। शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते ,क्योंकि हम भिखमंगे थे और जहां- कहीं वैसी सूरत देखते, टोपी उतार जीभ निकाल, “कूची- कूची”(दया -दया)एक पैसा” कहते भीख माँगने लगते ।लेकिन पहाड़ की ऊंची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते? और अगला पड़ाव 16-17 मील से कम नहीं था ।मैंने सुमति से कहा कि यहां

से लड्कोर तक के लिए दो घोड़े कर लो, सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

ध्यातव्य--हमने देखा कि लेखक को तिब्बत की यात्रा के क्रम में कई प्रकार के अनुभव होते हैं । इन अनुभवों में से उनका एक महत्वपूर्ण अनुभव है; हथियार का कानून न होना, जिसके कारण वहाँ के वासी बंदूक, पिस्तौल को लाठी की तरह लेकर टहलते थे। लेखक ने यहां पर एक चर्चा और किया है कि वहाँ की सरकार ज्यादा खर्च नहीं करती है खुफिया -विभाग पर। वहाँ डकैती खुलेआम होती है। आदमी को कभी भी मार दिया जा सकता है। उसकी परवाह किसी को नहीं रहती है। इसीलिए लेखक ने अपने आपको बचाने के लिए कहा है कि जब भी उनके सामने वैसे व्यक्ति प्रतीत होते हैं ,,जो डाकू जान पड़ते हैं ,लुटेरे जान पड़ते हैं ,तो उनके सामने वे दया की भीख मांगते हैं और पैसे मांगते हैं जिससे डाकू जैसे प्रतीत होने वाले लोग उन्हें छोड़ देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं ।

शेष अगली कक्षा में।

शब्दार्थ-:

पहिले-पहले

डाँड़ा-ऊँची जगह

थोङ्ला-तिब्बती सीमा का एक स्थान

धन्यवाद

मारी पिंकी “कुसुम”